पाठ – कबीर के दोहे

पाठ सार

कबीरदास जी के दोहे हमें अच्छे जीवन के लिए कई महत्वपूर्ण बातें सिखाते हैं। वे कहते हैं कि **सच्चाई सबसे बड़ा धर्म है और झूठ सबसे बड़ा पाप**। जो हमेशा सच बोलता है, उसके मन में ईश्वर का वास होता है। केवल धन, ऊँचा पद या ताकत होना किसी की महानता नहीं दिखाता; असली महानता दूसरों की मदद करने में है।

कबीरदास जी गुरु को भगवान से भी बड़ा मानते हैं, क्योंकि गुरु हमें सही मार्ग दिखाता है। वे बताते हैं कि किसी भी चीज़ की **अति ठीक नहीं होती**, चाहे वह बोलना, चुप रहना, बारिश या धूप हो; संतुलन जरूरी है।

वाणी में मधुरता रखनी चाहिए; गुस्से या घमंड से बोली गई बात लोगों को दूर करती है, लेकिन प्यार और नम्रता से कही गई बात सबको सुख देती है। आलोचक (निंदक) हमारे लिए उपयोगी होते हैं क्योंकि वे हमारी कमियाँ दिखाकर हमें सुधारने में मदद करते हैं।

आदर्श साधु वह है जो अच्छे कामों को अपनाए और बेकार बातों को त्यागे। संगति का भी महत्व है; अच्छे लोगों के साथ रहने से अच्छे फल और बुरे लोगों के साथ रहने से बुरे फल मिलते हैं।

मुख्य संदेश:

- सच्चाई अपनाएँ
- संतुलित रहें
- मधुर वाणी बोलें
- आलोचना से सीखें
- अच्छे गुण अपनाएँ और बुराइयाँ छोड़ें
- अच्छी संगति में रहें

पाठ व्याख्या

1. **साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।**
   जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप॥

शब्दार्थ-

साँच	-	सच, सच्चाई
तप	-	तपस्या
पाप	-	गलत काम
जाके	-	जिसके
हिरदे	-	हृदय

व्याख्या- *कबीर दास जी कहते हैं सत्य बोलना तपस्या करने के बराबर है। अर्थात् सच्चाई से जीना पूजा-पाठ या तपस्या करने के समान है। झूठ बोलना बहुत बुरा होता है, यह पाप के समान है। जो इंसान सच्चा होता है, उसके मन में गुरु या भगवान खुद ही आकर बस जाते हैं। इसलिए हमें हमेशा सच बोलना और ईमानदारी से रहना चाहिए।*

2. **बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।**
   पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥

शब्दार्थ-

खजूर	-	एक प्रकार का ऊँचा पेड़
पंथी	-	यात्री, राहगीर
लागै	-	लगते हैं
अति	-	बहुत

व्याख्या- *कबीर दास जी कहते हैं कि अगर कोई व्यक्ति केवल पद, धन या शरीर से बड़ा है, लेकिन दूसरों के काम नहीं आता, तो उसका बड़ा होना किसी काम का नहीं। जैसे खजूर का पेड़ ऊँचा तो होता है, पर उसकी छाया में कोई बैठ नहीं सकता और उसके फल भी बहुत ऊपर लगे होते हैं, जो आसानी से मिलते नहीं। उसी तरह जो व्यक्ति दूसरों की मदद नहीं करता, उसका बड़ा होना व्यर्थ है। सच्ची महानता वही है जो दूसरों के लिए फायदेमंद हो।*

3. **गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥**

शब्दार्थ-

गुरु	-	ज्ञान देने वाला
गोविंद	-	भगवान (कृष्ण)
दोऊ	-	दोनों
काके	-	किसके
लागौं	-	लगाऊँ, छूऊँ
पाँय	-	पैर
बलिहारी	-	निछावर होना
बताय	-	बताया

व्याख्या- *कबीर दास जी कहते हैं कि जीवन में गुरु का स्थान भगवान से भी ऊपर होता है। क्योंकि भगवान को हम तभी जान सकते हैं जब कोई अच्छा गुरु हमें उसका रास्ता दिखाए। अगर गुरु हमें भगवान का रास्ता नहीं दिखाते, तो हमें भगवान का ज्ञान नहीं हो पाता। इसलिए कबीरदास जी कहते हैं कि अगर भगवान और गुरु दोनों एक साथ खड़े हों, तो पहले गुरु के चरण छूने चाहिए क्योंकि वही हमें भगवान तक पहुँचाते हैं।*

4. **अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ॥**

शब्दार्थ-

अति	-	बहुत ज़्यादा
भला	-	अच्छा
चूप	-	चुप रहना
बरसना	-	बारिश होना

व्याख्या- *कबीर दास जी हमें सिखाते हैं कि किसी भी चीज़ का ज़्यादा होना हानिकारक होता है। अगर कोई बहुत ज़्यादा बोलता है, तो उसकी बातों का महत्व खत्म हो जाता है। अगर कोई हमेशा चुप रहता है, तो वह अपनी बात*

नहीं कह पाता। वैसे ही ज़्यादा बारिश बाढ़ लाती है और ज़्यादा धूप गर्मी और परेशानी देती है। इसलिए हमें हर काम में संतुलन रखना चाहिए, न ज़्यादा, न बहुत कम।

5. **ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।**
   औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।

शब्दार्थ-

ऐसी	-	इस तरह की
बानी	-	वाणी, बोली
मन का आपा	-	मन का घमंड, अहंकार
खोय	-	खो देना, समाप्त करना
औरन	-	दूसरों
सीतल	-	ठंडक, शांति
आपहुँ	-	स्वयं, खुद

व्याख्या- *प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी बताते हैं कि शब्दों में बहुत ताकत होती है। अगर हम गुस्से और घमंड से बोलेंगे तो लोग हमसे दूर हो जाएंगे, लेकिन अगर हम प्यार, नम्रता और शांति से बात करेंगे तो लोग खुश होंगे। मीठी वाणी से हम दूसरों के दिल में जगह बना सकते हैं और खुद भी खुश रह सकते हैं। इसीलिए हमें हमेशा अच्छे और मीठे शब्द बोलने चाहिए।*

6. **निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।**
   बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।

शब्दार्थ-

निंदक	-	बुराई करने वाला, आलोचक
नियरे	-	पास
आँगन	-	घर का खुला भाग
कुटी	-	झोपड़ी
छवाय	-	बनवाकर
बिन	-	बिना
निर्मल	-	साफ, शुद्ध
सुभाय	-	स्वभाव

व्याख्या- *कबीर दास जी बताते हैं कि हमें अपने निंदक (आलोचक) को अपने पास रखना चाहिए, क्योंकि वह बिना पानी और साबुन के ही हमारे स्वभाव और चरित्र को सुधारने का काम करता है।*
किसी भी व्यक्ति को अपनी कमियों का पता आसानी से नहीं चलता, लेकिन निंदक व्यक्ति हमारी कमजोरियों को बताकर हमें सुधारने का अवसर देता है।

7. **साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।**
   सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।

शब्दार्थ-

साधू - सज्जन
सूप - अनाज साफ करने का उपकरण
सुभाय - स्वभाव
सार - अच्छा, मूल्यवान
गहि रहै - पकड़कर रखना, संभालना
थोथा - बेकार, अनुपयोगी
उड़ाय - उड़ाना, अलग करना

व्याख्या- *प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने एक आदर्श साधु या सच्चे व्यक्ति के गुण बताते हुए उसका स्वभाव "सूप" के समान होने की बात कही है। सूप का उपयोग अनाज को साफ करने के लिए किया जाता है। यह अनाज को झटककर केवल अच्छे और उपयोगी दानों को अपने पास रखता है तथा कचरा या भूसी को अलग कर देता है। कबीरदास जी का संदेश है कि जैसे सूप केवल सार्थक चीज़ों को संभालता है और व्यर्थ को छोड़ देता है, वैसे ही एक साधु या सच्चे इंसान को भी जीवन में केवल अच्छी और मूल्यवान बातों को अपनाना चाहिए तथा नकारात्मक, व्यर्थ या हानिकारक बातों को त्याग देना चाहिए।*

8. **कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।**
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।

शब्दार्थ-

मन पंछी भया - मन पक्षी बन गया
भावै - पसंद आए, अच्छा लगे
तहवाँ - वहाँ
संगति - साथ, संग
तैसा - वैसा
फल पाय - परिणाम पाता है

व्याख्या- *कबीरदास जी मनुष्य के जीवन में संगति के प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। वे बताते हैं कि मनुष्य का मन पंछी के जैसे होता है। जैसे पक्षी जहाँ चाहें उड़कर चले जाते हैं, वैसे ही मनुष्य का मन भी आकर्षण के अनुसार स्थानों और लोगों की ओर खिंचता है। यदि हम सज्जनों, विद्वानों और सदाचारियों की संगति करेंगे तो हमारे विचार, आचरण और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आएगा। वहीं, दुष्ट और बुरे लोगों की संगति से हमारा चरित्र और कर्म नष्ट हो सकते हैं।*

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1. "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय। बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय॥ "इस दोहे में किसके विषय में बताया गया है?

- श्रम का महत्व
- ज्ञान का महत्व
- गुरु का महत्व
- भक्ति का महत्व

उत्तर:

- गुरु का महत्व (★)

प्रश्न 2. "अति का भला न बोलना अति का भला न चूप। अति का भला न बरसना अति की भली न धूप। "इस दोहे का मूल संदेश क्या है?

- हमेशा चुप रहने में ही हमारी भलाई है
- बारिश और धूप से बचना चाहिए
- हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है
- हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए

उत्तर:

- हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है (★)

प्रश्न 3. "बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं फल लागै अति दूर॥" यह दोहा किस जीवन कौशल को विकसित करने पर बल देता है?

- समय का सदुपयोग करना
- दूसरों के काम आना
- परिश्रम और लगन से काम करना
- सभी के प्रति उदार रहना

उत्तर:

- दूसरों के काम आना (★)
- सभी के प्रति उदार रहना (★)

प्रश्न 4. "ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै आपहुँ सीतल होय॥ "इस दोहे के अनुसार मधुर वाणी बोलने का सबसे बड़ा लाभ क्या है?

- लोग हमारी प्रशंसा और सम्मान करने लगते हैं

- दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है
- किसी से विवाद होने पर उसमें जीत हासिल होती है
- सुनने वालों का मन इधर-उधर भटकने लगता है

उत्तर:

- दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है (★)

प्रश्न 5. "साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप।। "इस दोहे से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

- सत्य और झूठ में कोई अंतर नहीं होता है
- सत्य का पालन करना किसी साधना से कम नहीं है
- बाहरी परिस्थितियाँ ही जीवन में सफलता तय करती हैं
- सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है जिससे हृदय प्रकाशित होता है

उत्तर:

- सत्य का पालन करना किसी साधना से कम नहीं है (★)

प्रश्न 6. "निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय।। "यहाँ जीवन में किस दृष्टिकोण को अपनाने की सलाह दी गई है?

- आलोचना से बचना चाहिए
- आलोचकों को दूर रखना चाहिए
- आलोचकों को पास रखना चाहिए
- आलोचकों की निंदा करनी चाहिए

उत्तर:

- आलोचकों को पास रखना चाहिए (★)

प्रश्न 7. "साधू ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहै थोथा देइ उड़ाय।। " इस दोहे में 'सूप' किसका प्रतीक है?

- मन की कल्पनाओं का
- सुख-सुविधाओं का
- विवेक और सूझबूझ का
- कठोर और क्रोधी स्वभाव का

उत्तर:

- विवेक और सूझबूझ का (★)

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर:

मेरा मानना है कि कबीर जी के सभी दोहे उच्च जीवन-मूल्यों पर आधारित है। जैसे-

1. सत्य हमारे हृदय को प्रकाशित करता है।
2. गुरु ईश्वर से भी श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे ही हमें ईश्वर से मिलवाते हैं।
3. हमें उदार बनने के साथ-साथ अपने जीवन में संतुलित भी रहना चाहिए।
4. मीठी वाणी का प्रयोग करना चाहिए। अपनी निंदा सुनकर अपने अवगुणों को दूर करना चाहिए।
5. मन को नियंत्रित करके सत्संगति को अपनाना चाहिए।

मिलकर करें मिलान

(क) पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें स्तंभ 2 में दिए गए इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।	1.	सत्य का पालन कठिन है और झूठ पाप के समान है।
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	2.	बड़ा होने के साथ व्यक्ति को उदार भी होना चाहिए।
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।	3.	गुरु शिष्य का मार्गदर्शन करते हैं और शिष्य गुरु का आदर करते हैं।
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	4.	मन को नियंत्रित करना और सही दिशा में ले जाना महत्वपूर्ण है।
5.	साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	5.	जीवन में संतुलन महत्वपूर्ण है।
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।	6.	हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को शांति प्राप्त हो सके।
7.	साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	7.	विवेकशील व्यक्ति को अच्छे और बुरे की पहचान होती है।
8.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	8.	आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए। वे हमें हमारी गलतियाँ बताते हैं।

उत्तर:

1. 3
2. 5
3. 6
4. 8
5. 7
6. 4

7. 1
8. 2

(ख) नीचे स्तंभ 1 में दी गई दोहों की पंक्तियों को स्तंभ 2 में दी गई उपयुक्त पंक्तियों से जोड़िए –

क्रम	स्तंभ 1	क्रम	स्तंभ 2
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।	1.	बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	2.	औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।	3.	जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप॥
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	4.	सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय॥
5.	साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	5.	पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।	6.	अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥
7.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	7.	जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय॥
8.	साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	8.	बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

उत्तर:
1. 8
2. 6
3. 2
4. 1
5. 4
6. 7
7. 5
8. 3

पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न- पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए-

(क) "कबिरा मन पंछी भया भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय ॥"

उत्तर:

कवि कहते हैं कि मन एक चंचल पक्षी के समान होता है। इसे जहाँ अच्छा लगता है, वहीं चला जाता है। लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि जैसी हमारी संगति होती है, वैसा ही हमारे जीवन पर उसका प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें

सत्संगति में रहना चाहिए |

(ख) “साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप॥”

उत्तर:

कबीर जी कहते हैं कि सत्य के बराबर कोई तप नहीं हैं क्योंकि सत्य का पालन करना कठिन कार्य है तथा झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सत्य है उसी के हृदय में स्वयं ईश्वर विराजते हैं।

सोच-विचार के लिए

प्रश्न- पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) “गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।” इस दोहे में गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान दिया गया है। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर:

जी, हाँ। मैं इससे सहमत हूँ क्योंकि गुरु ने अपने ज्ञान से ही हमें ईश्वर तक पहुँचने का रास्ता बताया है इसलिए गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान देना सर्वोचित है।

(ख) “बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।” इस दोहे में कहा गया है कि सिर्फ बड़ा या संपन्न होना ही पर्याप्त नहीं है। बड़े या संपन्न होने के साथ-साथ मनुष्य में और कौन – कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए? अपने विचार साझा कीजिए।

उत्तर:

दयालु, सहानुभूति, आत्मविश्वासी, उदारता, धैर्य, सत्य एवं मृदुभाषी, करुणा, ईमानदारी, सहनशीलता तथा निःस्वार्थता जैसी विशेषताएँ मनुष्य में होनी चाहिए।

(ग) “ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।” क्या आप मानते हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं स्वयं पर भी पड़ता है? आपके बोले गए शब्दों ने आपके या किसी अन्य के स्वभाव या मनोदशा को कैसे परिवर्तित किया? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर:

मैं मानता हूँ कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं स्वतः पर भी पड़ता है। दरअसल कुछ महीने पहले मेरे स्कूल की तरफ से बच्चों को पिकनिक पर ले जाया गया था। उसके लिए बड़ों की अनुमति अनिवार्य थी। मेरे दादा जी बहुत उग्र और क्रोधी स्वभाव के हैं। उनसे अनुमति माँगना बहुत कठिन था।

(घ) “जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय॥” हमारे विचारों और कार्यों पर संगति का क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर:

संगति हमारे विचारों और कार्यों को प्रभावित करती है। मेरा अनुभव इसका जीवंत उदाहरण है। मैं शुरू में पढ़ाई में

अच्छा था, लेकिन कक्षा छठी में एक ऐसे मित्र के साथ रहने लगा जो पढ़ाई को महत्व नहीं देता था। उसकी संगति में रहकर मैं भी पढ़ाई से मन हटाने लगा और मेरे अंक कम हो गए। माँ ने मुझे समझाया और अच्छे बच्चों के साथ रहने की सलाह दी। तब से मैंने अच्छी संगति अपनाई और पढ़ाई में फिर से सफलता हासिल की।

दोहे की रचना

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।।"

इन दोनों पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन दोनों पंक्तियों के दो-दो भाग दिखाई दे रहे है। इन चारों भागों का पहला शब्द है 'अति'। इस कारण इस दोहे में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न हो गया है। आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको ऐसी कई विशेषताएँ दिखाई देंगी, जैसे- दोहों की प्रत्येक पंक्ति को बोलने में एक समान समय लगता है। अपने-अपने समूह में मिलकर पाठ में लिए गए दोहों की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(क) दोहों की उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें –

प्रश्न 1. एक ही अक्षर से प्रारंभ होने वाले (जैसे- राजा, रस्सी, रात) दो या दो से अधिक शब्द एक साथ आए हैं।

उत्तर:

(क) गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
(ख) निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
(ग) साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
(घ) जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।
(ङ) ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।

प्रश्न 2. एक शब्द एक साथ दो बार आया है। (जैसे- बार-बार)

उत्तर:

सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ।।

प्रश्न 3. लगभग एक जैसे शब्द, जिनमें केवल एक मात्रा भर का अंतर है (जैसे- जल, जाल) एक ही पंक्ति में आए हैं।

उत्तर:

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।।

प्रश्न 4. एक ही पंक्ति में विपरीतार्थक शब्दों (जैसे- अच्छा-बुरा) का प्रयोग किया गया है।

उत्तर:

(क) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
(ख) अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।
(ग) औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय ॥

प्रश्न 5. किसी की तुलना किसी अन्य से की गई है। (जैसे- दूध जैसा सफेद)

उत्तर:

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
परीक्षा तैयारी किट

प्रश्न 6. किसी को कोई अन्य नाम दे दिया गया है। (जैसे—मुख चंद्र है)

उत्तर:

कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।

प्रश्न 7. किसी शब्द की वर्तनी थोड़ी अलग है। (जैसे- 'चुप' के स्थान पर 'चूप ')

उत्तर:

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

प्रश्न 8. उदाहरण द्वारा कही गई बात को समझाया गया है।

उत्तर:

(क) बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
(ख) निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ।।
(ग) साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहे थोथा देइ उड़ाय।।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर:

विद्यार्थी समूह की सूची को सबके साथ साझा करें।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए-

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।"

- यदि आपके सामने यह स्थिति होती तो आप क्या निर्णय लेते और क्यों?
- यदि संसार में कोई गुरु या शिक्षक न होता तो क्या होता?

उत्तर:

- मैं अपने गुरु के चरणों को पहले नमन करता क्योंकि उन्हीं के ज्ञान एवं मार्गदर्शन से मुझे ईश्वर के दर्शन हुए होते।
- संसार में ज्ञान का प्रकाश कभी नहीं फैलता और ईश्वर प्राप्ति भी संभव न होती।

(ख) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप ।"

- यदि कोई व्यक्ति बहुत अधिक बोलता है या बहुत चुप रहता है तो उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?
- यदि वर्षा आवश्यकता से अधिक या कम हो तो क्या परिणाम हो सकते हैं?
- आवश्यकता से अधिक मोबाइल या मल्टीमीडिया का प्रयोग करने से क्या परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर:

- अधिक बोलने वाले व्यक्ति की बात का लोगों पर कम असर पड़ता है और कम बोलने वाले को लोग संकोची और डरपोक समझते हैं।
- यदि वर्षा आवश्यकता से अधिक हो तो फसलें बर्बाद हो जाती हैं, बाढ़ आ जाती है तथा जीवन तहस-नहस हो जाता है। इसी तरह अगर वर्षा आवश्यकता से कम हो तो अकाल पड़ जाता है लोग भूख-प्यास से दम तोड़ने लगते हैं।
- आँखें खराब हो जाती हैं। इससे स्वास्थ्य संबंधी अनेकों अन्य समस्याएँ भी हो जाती हैं जैसे- सिरदर्द, नींद की समस्या, तनाव, सामाजिक अलगाव और अवसाद आदि। इसके अलावा कक्षा में खराब शैक्षणिक प्रदर्शन और समय की बर्बादी भी होती है।

(ग) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।"

- झूठ बोलने पर आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?
- कल्पना कीजिए कि आपके शिक्षक ने आपके किसी गलत उत्तर के लिए अंक दे दिए हैं, ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे?

उत्तर:

- झूठ बोलने पर हम लोगों का भरोसा खो सकते हैं। हमें समाज में झूठ पकड़े जाने पर शर्मिन्दगी उठानी पड़ सकती है और हमारा आत्मसम्मान खतरे में पड़ सकता है।
- मैं जाकर बड़ी शालीनता के साथ उन्हें बता दूँगा कि उन्होंने मुझे गलती से उस प्रश्न के उत्तर के अंक दे दिए हैं जो गलत था।

(घ) "ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोया।"

- यदि सभी मनुष्य अपनी वाणी को मधुर और शांति देने वाली बना लें तो लोगों में क्या परिवर्तन आ सकते हैं?
- क्या कोई ऐसी परिस्थिति हो सकती है जहाँ कटु वचन बोलना आवश्यक हो? अनुमान लगाइए।

उत्तर:

- सभी एक दूसरे की बात को बड़े ध्यान से सुनेंगे और सबका मन प्रसन्न एवं शांत रहेगा। लोग एक-दूसरे से प्रभावित होंगे तथा एक-दूसरे के असंभव कार्य को भी संभव बनाने का भरपूर प्रयत्न करेंगे। प्रेम एवं भाईचारा बढ़ेगा। हमारे संबंध सुदृढ़ होंगे।
- मेरे अनुमान में हम मधुर वाणी से किसी भी परिस्थिति पर विजय पा सकते हैं। ऐसी कोई परिस्थिति नहीं हो सकती जहाँ कटु वचन बोलना : आवश्यक हो।

(ङ) "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।"

- यदि कोई व्यक्ति अपने बड़े होने का अहंकार रखता हो तो आप इस दोहे का उपयोग करते हुए उसे 'बड़े होने या संपन्न होने' का क्या अर्थ बताएँगे या समझाएँगे?
- खजूर, नारियल आदि ऊँचे वृक्ष अनुपयोगी नहीं होते हैं। वे किस प्रकार से उपयोगी हो सकते हैं? बताइए।
- आप अपनी कक्षा का कक्षा नायक या नायिका (मॉनीटर) चुनने के लिए किसी विद्यार्थी की किन-किन विशेषताओं पर ध्यान देंगे?

उत्तर:

- मैं उसे समझाऊँगा कि खजूर का पेड़ बहुत ऊँचा होता है किंतु उसकी छाया एवं फल थके राहगीर को आराम नही दे पाते ठीक वैसे ही यदि आप बहुत बड़े बन गए हैं किंतु आपका बड़प्पन किसी के काम नहीं आया तो आपका बड़प्पन व्यर्थ है। आपको उदार बनना चाहिए।
- खजूर, नारियल आदि ऊँचे वृक्ष भी अनेक प्रकार से उपयोगी होते हैं। खजूर फल, लकड़ी और अन्य उपयोगी चीजों के लिए जाना जाता है। नारियल का फल, पानी और तेल अत्यंत उपयोगी होते हैं।
- अनुशासनप्रिय, समय का पाबंद, सत्यवादी, ईमानदार तथा मेहनती।

(च) "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।"

- यदि कोई आपकी गलतियों को बताता रहे तो आपको उससे क्या लाभ होगा?
- यदि समाज में कोई भी एक-दूसरे की गलतियाँ न बताए तो क्या होगा?

उत्तर:

- मैं अपनी गलतियाँ जानकर उन्हें सुधारने का प्रयत्न करूँगा ताकि एक अच्छा इंसान बन सकूँ।
- समाज में सुधार की संभावना नहीं बचेगी। जो जैसा है, वह वैसा ही रहेगा।

(छ) "साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।"

- कल्पना कीजिए कि आपके पास 'सूप' जैसी विशेषता है तो आपके जीवन में कौन-कौन से परिवर्तन आएँगे?
- यदि हम बिना सोचे-समझे हर बात को स्वीकार कर लें तो उसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर:

- अगर मेरे पास सूप जैसी विशेषता हो तो मैं अपने अंदर प्रेम, ईमानदारी, सच्चाई, उदारता तथा अन्य सद्गुणों को अपनाऊँगा तथा समाज ' में अपनी जगह बना पाऊँगा ।
- कोई भी हमें मूर्ख बना पाएगा। हमारा फायदा भी उठा पाएगा।

(ज) "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।'

- यदि मन एक पंछी की तरह उड़ सकता तो आप उसे कहाँ ले जाना चाहते और क्यों?
- संगति का हमारे जीवन पर क्या-क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर:

- यदि मन एक पंछी की तरह उड़ सकता तो मैं उसे अपने दादा-दादी के पास शिमला ले जाना चाहता। मैं अपने माँ-पापा के साथ दिल्ली में रहता हूँ और यहाँ काफी प्रदूषण है। शिमला का प्राकृतिक सौंदर्य और साफ-सुथरा वातावरण मेरे मन को बहुत भाता है।

- संगति का हमारे जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। अच्छी संगति से हम महानता की ओर बढ़ते हैं और बुरी संगति से हमारा पतन हो जाता है। जैसे- बारिश की एक बूँद मिट्टी में गिरती है तो अपना अस्तित्व खो देती है किंतु वही बूँद सीप में गिर कर मोती बन जाती हैं।

वाद-विवाद

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।।"

(क) इस दोहे का आज के समय में क्या महत्व है? इसके बारे में कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। एक समूह के साथी इसके पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे और दूसरे समूह के साथी इसके विपक्ष में बोलेंगे। एक तीसरा समूह निर्णायक बन सकता है।

उत्तर:

अध्यापक अपनी कक्षा में इस गतिविधि को छात्रों द्वारा करवाए।

(ख) पक्ष और विपक्ष के समूह अपने-अपने मत के लिए तर्क प्रस्तुत करेंगे, जैसे-
पक्ष-वाणी पर संयम रखना आवश्यक है।
विपक्ष-अत्यधिक चुप रहना भी उचित नहीं है।

उत्तर:

पक्ष (वाणी पर संयम):

- वाणी पर संयम रखने से हम दूसरों को चोट नहीं पहुँचाते और सम्मान बनाए रखते हैं।
- सोच-समझकर बोले गए शब्द ज्यादा प्रभावशाली और लाभकारी होते हैं।
- अति बोलने से विवाद, झगड़ा और गलतफहमी पैदा होती है।

विपक्ष (अत्यधिक चुप न रहना):

- हमेशा चुप रहने से अपनी बात और विचार दूसरों तक नहीं पहुँच पाते।
- आवश्यकता पड़ने पर बोलना भी महत्वपूर्ण है, जैसे किसी अन्याय या समस्या को रोकने के लिए।
- सही समय पर अपनी बात रखना साहस और जिम्मेदारी दर्शाता है।

(ग) पक्ष और विपक्ष में प्रस्तुत तर्कों की सूची अपनी लेखन – पुस्तिका में लिख लीजिए ।

उत्तर:

विद्यार्थी अपनी लेखन – पुस्तिका में लिख लीजिए ।

शब्द से जुड़े शब्द

प्रश्न – नीचे दिए गए स्थानों में कबीर से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए और अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए-

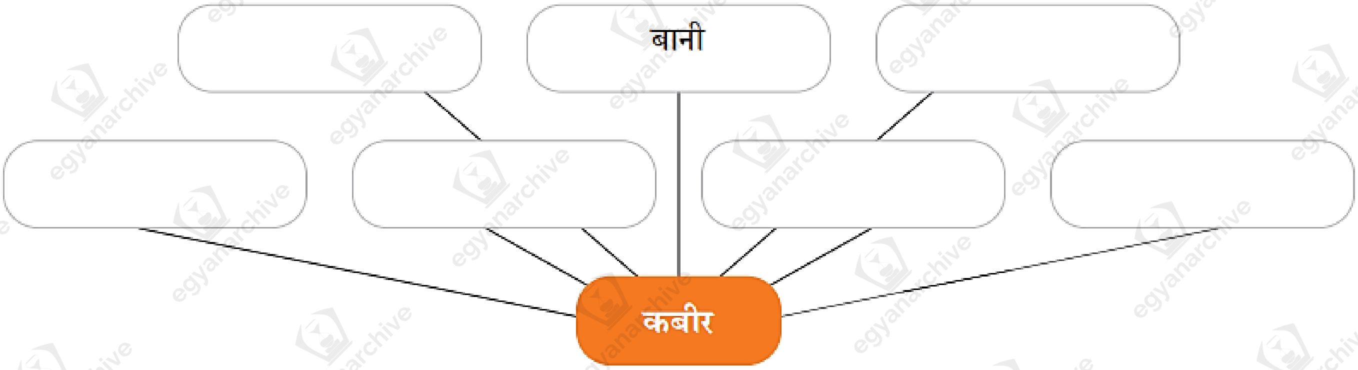

उत्तर:

गुरु, संगति, निंदक, पंछी, गोविंद, मन

दोहे और कहावतें

"कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय ।।"

इस दोहे को पढ़कर ऐसा लगता है कि यह बात तो हमने पहले भी अनेक बार सुनी है। यह दोहा इतना अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय है कि इसकी दूसरी पंक्ति लोगों के बीच कहावत – 'जैसा संग वैसा रंग' (व्यक्ति जिस संगति में रहता है, वैसा ही उसका व्यवहार और स्वभाव बन जाता है ।) की तरह प्रयुक्त होती है। कहावतें ऐसे वाक्य होते हैं जिन्हें लोग अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। इसमें सामान्यतः जीवन के गहरे अनुभव को सरल और संक्षेप में बता दिया जाता है।

उत्तर:

1. **घर की मुर्गी दाल बराबर** – गोपाल के पिता अच्छे शिक्षक हैं, फिर भी गोपाल किसी और से पढ़ाई करवाता है। यही कहते हैं, घर की मुर्गी दाल बराबर।
2. **घर का भेदी लंका ढाए** – लुटेरों में चोरी के सामान को बाँटते समय एक लुटेरे ने चोरी पकड़वा दी। सच में, घर का भेदी लंका ढाए।
3. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** – सरपंच ने रमेश की जमीन हड़प ली और झूठे आरोप में फंसा दिया। यही कहते हैं, जिसकी लाठी उसकी भैंस।
4. **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत** – वसुधा पढ़ाई नहीं कर पाई और कम अंक आने पर रोने लगी। पिताजी ने कहा, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

सबकी प्रस्तुति

पाठ के किसी एक दोहे को चुनकर अपने समूह के साथ मिलकर भिन्न-भिन्न प्रकार से कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए। उदाहरण के लिए-

- गायन करना, जैसे लोकगीत शैली में ।

- भाव – नृत्य प्रस्तुति।
- कविता पाठ करना।
- संगीत के साथ प्रस्तुत करना।
- अभिनय करना, जैसे एक दोस्त गुस्से में आकर कुछ गलत कह देता है लेकिन दूसरा दोस्त उसे समझाता है कि मधुर भाषा का कितना प्रभाव पड़ता है। (ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।)

उत्तर:

विद्यार्थी अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में कक्षा में करें।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।" क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने आपको सही दिशा दिखाने में सहायता की हो? उस व्यक्ति के बारे में बताइए।

उत्तर:

मेरी माँ ने मेरे जीवन में मुझे सदा सही दिशा दिखाई है। वह एक स्कूल में प्रिंसीपल हैं। जब भी मैं किसी भी चीज को लेकर असमंजस में होती हूँ तो वह तुरंत मुझे उस उलझन से निकाल देती हैं। वह मुझे सदैव प्रोत्साहित करती हैं।

(ख) "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।" क्या कभी किसी ने आपकी कमियों या गलतियों के विषय में बताया है जिनमें आपको सुधार करने का अवसर मिला हो? उस अनुभव को साझा कीजिए।

उत्तर:

मुझे मेरी बड़ी बहन ने मेरी एक कमी के बारे में बताया था कि मुझे बहुत आदत है जब भी कोई दो व्यक्ति बात कर रहे होते हैं, तो बिना बात जाने मैं उस पर अपनी राय देने लग जाती हूँ। मुझे इस आदत को सुधारना चाहिए। मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ और मैंने उस पर ध्यान देना शुरू किया। देखते ही देखते मैंने अपनी इस गलत आदत को अपने से दूर कर दिया।

(ग) "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।" क्या आपने कभी अनुभव किया है कि आपकी संगति (जैसे-मित्र) आपके विचारों और आदतों या व्यवहारों को प्रभावित करती है? अपने अनुभव साझा कीजिए।

उत्तर:

हमारी संगति हमारे विचारों और आदतों और व्यवहारों को बहुत प्रभावित करती है। मेरी माँ चाहती थी कि मैं गिटार बजाना सीखूँ लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगता था। फिर मेरी दोस्ती रॉकी से हुई। वह बहुत बढ़िया गिटार बजाता था। उसके साथ रह-रह कर मुझे भी गिटार बजाना अच्छा लगने लगा।

सृजन

(क) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।"

इस दोहे पर आधारित एक कहानी लिखिए जिसमें किसी व्यक्ति ने कंठिन परिस्थितियों में भी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। (संकेत- किसी खेल में आपकी टीम द्वारा नियमों के उल्लंघन का आपके द्वारा विरोध किया जाना।)

उत्तर:

कहानी –

सोमवार को हमारे स्कूल और विवेकानन्द पब्लिक स्कूल के बीच फुटबॉल मैच था। मैदान में बहुत भीड़ थी। मैच बराबरी पर खत्म हुआ और विजेता तय करने के लिए पेनेल्टी शूटआउट हुआ। हमारी टीम से रवि को गोल करने भेजा गया। रवि ने रेफरी का ध्यान भटकने पर फुटबॉल लाइन से आगे रखकर गोल कर दिया। सब खुश हुए, लेकिन मुझे यह सही नहीं लगा। मैंने प्रिंसिपल और रेफरी को सच बताया। इसके बाद सही निर्णय लिया गया और सार्थक की टीम को विजेता घोषित किया गया। मुझे खुशी हुई कि मैंने सच बोलकर न्याय किया।

(ख) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।

इस दोहे को ध्यान में रखते हुए अपने किसी प्रेरणादायक शिक्षक से साक्षात्कार कीजिए और उनके योगदान पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर:

रे प्रिय शिक्षक – यशपाल मेहता जी

शिक्षक हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। यशपाल मेहता जी केवल किताबों का ज्ञान नहीं देते, बल्कि हमें सही जीवन जीने के तरीके, अच्छे मूल्यों और आदर्शों की भी शिक्षा देते हैं। वे हमें पढ़ाई के साथ-साथ आत्मविश्वास, अनुशासन और व्यक्तिगत विकास में भी मार्गदर्शन करते हैं।

यशपाल सर हमें अंग्रेज़ी विषय पढ़ाते हैं। पहले मुझे यह विषय पसंद नहीं था, लेकिन अब यह मेरा पसंदीदा विषय बन गया है। उनका पढ़ाया हुआ पाठ मैं कभी नहीं भूलता। उनका व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक है, और उनका स्वभाव बहुत अच्छा और मिलनसार है।

वे गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ाते हैं और सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करते हैं। यशपाल जी मेरे लिए प्रेरणा हैं। मुझे उनके जैसे शिक्षक से पढ़ने का सौभाग्य मिला, और यह मेरी बहुत बड़ी खुशकिस्मती है।

कबीर हमारे समय में

(क) कल्पना कीजिए कि कबीर आज के समय में आ गए हैं। वे आज किन-किन विषयों पर कविता लिख सकते हैं? उन विषयों की सूची बनाइए।

उत्तर:

अगर कबीरदास जी आज के समय में होते तो वे निम्नलिखित विषयों पर कविता लिख सकते हैं:

1. **प्रदूषण और पर्यावरण संरक्षण** – जल, वायु और भूमि की स्वच्छता पर।
2. **सामाजिक असमानता** – गरीबी, भेदभाव और जातिवाद पर।
3. **शिक्षा और बच्चों का भविष्य** – शिक्षा के महत्व और नैतिक मूल्यों पर।
4. **सच्चाई और ईमानदारी** – भ्रष्टाचार, झूठ और कपट पर।
5. **आध्यात्मिकता और ध्यान** – आधुनिक जीवन में मानसिक शांति और साधना पर।
6. **तकनीक और मोबाइल/इंटरनेट का प्रभाव** – सोशल मीडिया और इसकी आदतों पर।
7. **सहयोग और भाईचारा** – मानवता, प्रेम और समाज में मेलजोल पर।
8. **धर्म और कर्म** – दिखावा धर्म, पाखंड और सच्चे कर्मों पर।

(ख) इन विषयों पर आप भी दो-दो पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर:

ऊपर बताए गए विषयों पर दो-दो सरल पंक्तियाँ दी गई हैं:

1. **प्रदूषण और पर्यावरण संरक्षण**
   जल, वायु और धरती को स्वच्छ रखना,
   धरती माँ को हम सभी का कर्तव्य समझना।
2. **सामाजिक असमानता**
   गरीब, अमीर सबको मिले समान अधिकार,
   नहीं हो कोई भेदभाव या कोई हार।
3. **शिक्षा और बच्चों का भविष्य**
   पढ़ाई से खुलते हैं जीवन के द्वार,
   ज्ञान से बनता है बच्चा सच्चा उपहार।
4. **सच्चाई और ईमानदारी**
   सत्य बोलो, झूठ से बचो, यही है राह,
   ईमानदारी बनाती है जीवन को साफ़ और प्यारा।
5. **आध्यात्मिकता और ध्यान**
   मन को शांत कर, ध्यान में लगाओ,
   सच्ची शांति और आनंद पाओ।
6. **तकनीक और मोबाइल/इंटरनेट का प्रभाव**
   मोबाइल और इंटरनेट से सीखो सही ज्ञान,
   पर न खोओ मित्र और घर का प्यार।
7. **सहयोग और भाईचारा**
   सहयोग करो और प्रेम बाँटो चारों ओर,
   बढ़ेगा समाज में खुशी और प्यार।
8. **धर्म और कर्म**
   धर्म दिखावा नहीं, कर्म सच्चे करो,
   सच्चाई और भलाई की राह अपनाओ।

साइबर सुरक्षा और दोहे

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में विचार-विमर्श कीजिए और साझा कीजिए-

(क) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप। " इंटरनेट पर अनावश्यक सूचनाएँ साझा करने के क्या – क्या संकट हो सकते हैं?

उत्तर:

इंटरनेट पर अनावश्यक सूचनाएँ साझा करने के बहुत से संकट हो सकते हैं। जैसे- हमारी व्यक्तिगत जानकारी का

दुरुपयोग, वित्तीय धोखाधड़ी, साइबर बुलिंग, ऑनलाइन उत्पीड़न, स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव और बिना सत्यापित जानकारी के लोग गलत सूचनाओं के प्रसार में योगदान करके समाज में भ्रम और अविश्वास फैलाते हैं।

(ख) "साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।" किसी भी वेबसाइट, ईमेल या मीडिया पर उपलब्ध जानकारी को 'सूप' की तरह छानने की आवश्यकता क्यों है? कैसे तय करें कि कौन – सी सूचना उपयोगी है और कौन-सी हानिकारक?

उत्तर:

हमें किसी भी वेबसाइट, ईमेल या मीडिया पर उपलब्ध जानकारी को तभी उपयोगी मानना चाहिए अगर वो सत्यापित है और सरकार द्वारा उसकी सूचना हम तक पहुँचाई गई है। सबसे पहले जानकारी के स्रोत की विश्वसनीयता की जाँच करनी चाहिए। यदि प्रतिष्ठित संगठन या व्यक्ति द्वारा है तो उपयोगी है अन्यथा हानिकारक है।

आज के समय में

नीचे कुछ घटनाएँ दी गई हैं। इन्हें पढ़कर आपको कबीर के कौन-से दोहे याद आते हैं? घटनाओं के नीचे दिए गए रिक्त स्थान पर उन दोहों को लिखिए-

(क) अमित का मन पढ़ाई में नहीं लगता था और वह गलत संगति में चला गया। कुछ समय बाद जब उसके अंक कम आए तो उसे समझ में आया- 'संगति का असर जीवन पर पड़ता है।

उत्तर:

कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय॥

(ख) एक विद्यार्थी इंटरनेट पर लगातार सूचनाएँ खोज रहा था। उसके पिता ने कहा- " हर जानकारी सही नहीं होती, सही बातों को चुनो और बेकार छोड़ दो।"

उत्तर:

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय॥

(ग) आपका एक मित्र आपकी किसी गलत बात पर आपकी आलोचना करता है। आप पहले परेशान होते हैं, लेकिन फिर आपने सोचा –" आलोचना मुझे सुधरने का मौका देती है, मुझे इन बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए। इसे सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।"

उत्तर:

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥

(घ) रीमा ने अपने गुस्से में सहकर्मी को बुरा-भला कह दिया, जिससे वातावरण बिगड़ गया। बाद में उसने समझा कि अगर वह शांति से बात करती तो समस्या हल हो जाती।

उत्तर:
ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय ॥

(ङ) कक्षा में मोहन ने बहुत अधिक बोलकर सबको परेशान कर दिया, जबकि रमेश बिल्कुल चुप रहा। गुरुजी ने कहा – "बोलचाल में संतुलन आवश्यक है, न अधिक बोलो, न अधिक चुप रहो।"
उत्तर:
अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप

(च) सुरेश को जब 'प्रतिभा सम्मान' मिला तो उसने कहा- "इसमें मेरे परिश्रम के साथ मेरे गुरुजनों का मार्गदर्शन भी सम्मिलित है ।'
उत्तर:
गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।

खोजबीन के लिए
अपने परिजनों, मित्रों, शिक्षकों, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता से कबीर के भजनों, गीतों, लोकगीतों को खोजिए और सुनिए। किसी एक गीत को अपनी लेखन – पुस्तिका में लिखिए। कक्षा के सभी समूहों द्वारा एकत्रित गीतों को जोड़कर एक पुस्तिका बनाइए और कक्षा के पुस्तकालय में उसे सम्मिलित कीजिए।
नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग करके आप कबीर के बारे में और जान – समझ सकते हैं-

- **संत कबीर**
  https://youtu.be/FGMEpPJJQmk?si=RC-hopXrWwDWi8Og
- **कबीर की साखियाँ**
  https://youtu.be/ngF88zXnfQ0?si=sd7Ly7dNba-HzET8
- **दोहे कबीर, रहीम, तुलसी**
  https://www.youtube.com/watch?v=cnrjLCkggr4&t=12s&ab_channel=NCERTOFFICIAL